जानकीपंचाशिका ॥

इसमें

देवी अष्टक और जानकी मंगल भी अन्त में संयुक्त है

जानकी पंचाशिका में पन्द्रह कवित्त दश किरवान और छः अमृतध्वनि छन्द तथा उन्नीस साग्रिंत छप्पै छन्दों से श्रीमती जगज्जननी जानकीजी की स्तुति है देवी अष्टक में आठ सवैया छन्दों से श्रीदेवीजी की स्तुति है और जानकी मंगल में जानकीजी की उत्पत्ति से लेकर विवाह पर्य्यन्त की कथा मनोहर छन्दों में वर्णित है

जिसको

महाशय उमरायजीने कवित्तादि के पढ़नेवालों के निमित्त रचना किया

दूसरी बार

NATIONAL LIBRARY
NO. 11200
DATE 14.3.62
CALCUTTA
7798
2 Aw
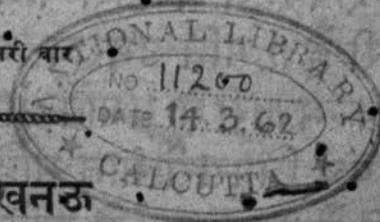
:लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपा

दिसम्बर सन् १८९६ ई०

जानकीपंचाशिका

मारिके सुरारी करी देवन सुखारी मुनि संतन पुकारी जैति लोक दश चारी है। आसन गजारी वर्म चर्म शूल भारी कर सायक सुधारी निज पौरुष सम्हारी है॥ भनि उमराव मिथिलेश की कुमारी तेरी महिमा निनारी सकै बेदना उचारी है। आनँद की कारी सब आपदा सँहारी ऐसी चरण तुम्हारी जगदंब भक्ति प्यारी है॥ १॥ भारती उचारी का पुलोमजा बिचारी कौन सिंधु की दुलारी तोहिं ध्यावत मुरारी है। नाम उरधारी शेष रटत सम्हारी पै न पावत करारी बेद बदत सुधारी है॥ भनि उमराव व्यास देव सुधाधारी विघ्नराज कल्मजारी ते न पावैं छोर भारी है। गावत तमारी मुख पंच त्रिपुरारी मात महिमा तुम्हारी जगदंब लोक न्यारी है॥ २॥ आवो चढ़ि भारी महिषेश के तयारी सेन संगलै हँकारी प्रलय काल घटा कारी है। पैज कर भारी तबै तेही खड्गधारी रण शहर सँहारी महा मारी सी प्रचारी है॥ भनि उमराव रूप कालिका सम्हारी अवधेश के पियारी मिथिलेश के कुमारी है। खप्परले

धारी शिरकाट शत्रुधारी करी होमसी सुधारी दई देवन सुखारी है॥ ३ ॥ कल्प अन्तकारी साधु संत शोकटारी मुनि देवन उबारी गिरिराज की कुमारी तैं। जादिन सुरारी शीश गोशत प्रचारी तेहि तादिन अमारी गज सहित सँहारी तैं॥ भनि उमराव द्वैत अर्थ आदि चारी उक्ति युक्ति देत भारी भुक्त दाइन सुधारी तैं। लोक लोक न्यारी यश गावत सम्हारी रूप अद्भुत सवारी कोटि मैनकासी नारी तैं॥ ४॥ आसन गजारी चढ़ि खड्ग लै सुधारी वर्म चर्म शूल भारी चाप सायक सम्हारी है। मैनका अगारी उमा दाहिनी निनारी काम भारती बिहारी, श्रीपुलोमजा पछारी है॥ भनि उमराव सबै देवतान नारी दिये आसपास भारी जुरी योगिनि कतारी है। हाहाकार भारी परे लोक लोक न्यारी जब चलत प्रचारी सिया मात की सवारी है॥ ५॥ शंकर मनावैं कैक भांति विष्णुध्यावैं ब्रह्म चन्द्र इन्द्र गावैं पै न पावैं भेव ओरा है। पवन ध्यान लावैं सेवा पन्नग जनावैं प्रीति पूरण लड़ावैं पन्नगाशन भकोरा है॥ भनि उमराव शची रंभासी रिझावैं देख देख के लजावैं रति रूप को नजोरा है। मातु तोहिं भावै राम भक्त जो कहावै नाम अमृतसी पावै पियै प्रेमको कटोरा है॥ ६॥ संपति प्रभावै घंटनाद देखलावै हार मैनका लजावै छटा रूप की अजोर पै। बुद्धिकी समावैं ज्ञान भारती सकावै इंद्र रंक से जनावै श्री बिभूति कीन थोरा पै॥ भनि उमराव कला बेदहून पावै भेद पावक डरावै अंग तेजही के जोरा पै। राम नाम गावै हृदय

प्रेम जो लड़ावै मातु तोहिं जो न ध्यावै तौन बैठे जाय कोरापै॥ ७॥ दुष्ट को दबावै भक्त प्रेम को बढ़ावै साधु संत को हिलावै वोरितावै रोग नावैरे। मोह को खसावै दावै बिपति नशावै ज्ञान गावै देवसावै उपजावै श्रीउरावैरे॥ प्रीति को निभावै भावै पुत्र लो जनावै दुःख दारिद्र भगावै औ रमावै चित्त चावैरे। जानश्री सुभावै भक्ति भावै जोन आवै वृथा जीवन गनावै उमरावै क्यों न गावैरे॥८॥ केती माथ नावैं केती बीजना डोलावैं केती पानलै खवावैं केती सेंजहू बिछावैं रे। केती अन्हवावैं केती उबटन उतावैं केती सोधो लै लगावैं केती बस्त्र धोय लावैं रे॥ भनि उमराव केती सीय को मनावैं केती प्रेमहू लड़ावैं केती भूषण बनावैंरे। केती चित चावैं करि आरती रिझावैं महा केती देवतानी खड़ी अफ़दा जनावैंरे॥ ९॥ मातु जो सदावै सर्व लोक की कहावै जाहि ध्यावै अहिरावै पैन पावै नेकु भेवारे। बासव रिझावै गिरा इंदिरा मनावै उमा आछे ध्यान लावै उपजावै शंची सेवारे॥ भनि उमरावै पोनपूत शीश नावै भालुकीश ने मचावै सो सिहावै सर्व देवारे। अंग पुलकावै नयन नीर लै बहावै नाम सीता जौन गावै तौन पावै भूरि मेवारे॥ १०॥ सीता सर्व लक्षी रूप अद्भुत बिलक्षी महा बुद्धिमान दक्षी सदा समर बिपक्षीतैं। पैजकर अक्षी ब्रह्म वृक्षी देव पक्षी मींज डारी प्रति पक्षी कैक मक्षी सी प्रत्यक्षीतैं॥ भनि उमराव ताहि जाने शास्त्र कच्छी तेही धारी रूप मच्छीआदिश्री सहस्र अच्छी तैं। कंजपत्र अक्षी गुनज्ञान भनाध्यक्षी

मधु कैटभादि भक्षी भक्त रक्षी हृदय स्वच्छी तैं॥ ११॥ सर्व देव रक्षी रावणादि दैत्य भक्षी चंड मुंड धूम्र अक्षी कोप मारी तैं प्रत्यक्षी हैं। लक्ष लक्ष कक्षी सब शास्त्र भेद लक्षी महा दक्षी पद्म अक्षी ध्यान स्वच्छी धनाध्यक्षी हैं॥ भनि उमराव दृष्टि देखि के तिरिच्छी देख असुर अकच्छी भये निबल निमक्षी हैं। दीनन के पक्षी जंग भूमिके विपक्षी जगदंब रूप अच्छी करी रंभारूप त्वच्छी हैं॥ १२॥ रक्त बीज भक्षी चंड मुंड मारदक्षी धूम्रलोचन प्रत्यक्षी मदडारी तैं निपक्षीकैं। केते प्रतिपक्षी भाग खोलि खोलि कच्छी तिन्हें कोपके लिरच्छी गण फारी हाथ अच्छी कैं॥ भनि उमराव रूप रावरी अलच्छी धरी लीला को सलच्छी महाकाली हृदये स्वच्छी कै। आपमानं त्वच्छी तुम्हें ध्यावै पवन पक्षी नाग किन्नरादि यक्षी तिन्हें रच्छीपुर पक्षीकै॥ १३॥ कालकर्म भक्षी सदां सेतुधर्म रक्षी रहे दीन योनि पक्षी करताके साते पक्षीसैं। रूप अप्रतक्षी औ प्रतक्षी प्रभाध्यक्षी प्राणनाथ पाय पक्षी लही दक्षी कंज अच्छीतैं॥ भनि उमराघ कोप दृष्टि के तिरच्छी हती दैत्यराज कच्छीधरी समर विपक्षीतैं। रंभा कौन अच्छी करी इंदिरासि त्वच्छी ऐंसी आभाखरी स्वच्छी धरी जानुकी विलच्छीतैं॥ १४॥ विश्वभूत दक्षी बहु भाँति प्रेम रक्षी कोप दृष्टिकै सुभक्षी समय जान धनाध्यच्छी तैं। साधु संत पक्षी दुष्ट लोगके विपक्षी करी राजभोग त्वक्षी वननाथ साथ गच्छीतैं॥ भनि उमराव रूप जानकी विलच्छी धरी भक्त हेत लच्छी तहीं काहू संत्र पच्छीतैं। जयंति कलपक्षी

कामधेनुहूंते अच्छी विजय भूतिदेत.स्वच्छी भुक्ति मुक्ति पद्मअच्छीतें॥ १५॥ क्रिवान्॥ जहँविकट समर महँ शुंभ औो निशुंभ सजि आयो चाढ़ि चपल प्रबल बलवान। लेहँ शूलन कितिक गिरि खंडन कितिक कहुँ तोमर कितिक करधरे धनुबान॥ जहँ कढ़त विविध विध अयुध बढ़त रिस पढ़त सुजन उभरांव उरआन। जहँ बिरभ्भि बिरभ्भिं बहुरिस रिपु वारनपै चंढ़ि मृगराज सिय वाही किरवान॥ १६॥ जहँ हाथन कटत कहुँ माथन कटत कहुँपाथन बिनहिं काहु तजत सुप्रान। जहँ कोउ हाय कोउ माय कोउ आय बाय बंक कोउ मुहबाय ठाढ़ेलागे चिचिआंन॥ जहँ अररररहोत कहुँ छररर होत कहुँ भरर्र होत दल भागे भहरान। जहँ बिरभ्भि बिरभ्भि बहु रिस रिपुवारन पै चढ़ि मृगराज सिय वाही किरवान॥ १७॥ जहँ रथन से रथ मारि गजन से गज मारि हयनसों हय मारि डारी सब प्रान। जहँ भरिभरि खप्पर खडग शिर काटि काटि पाटि पाटि पुहुमीं मचाई घमसान॥ जहँ लोहुन सों लोथन कलित अगनित छवि छलकत कुसुमित किंशुकसमान। जहँ बिरभ्भि बिरभ्भि बहु रिस रिपु वारन पै चढ़ि मृगराज सिय वाही किरवान॥ १८॥ जहँपरत चिहुर बहु समर सहर बिच जित कित दनु दल लागे चिचियांन। जहँ योकत अरिन कोउ पोंकत विकल कोउ दपटत दढ़महामारी सी महान॥ जहँ खाय खाय माँसन करत धुनि श्वान स्यार कालके मनहुं जय करत बखान। जहँ बिरभ्भि बिरभ्भि बहु रिस रिपु वारन पै चढ़ि मृगराज सिय वाही किरवान॥

१९॥ जहँ ढालनसों मारि काहु भालन सँहारि काहु नखन सों फारि काहु करत निदान। जहँ करत विनय कोउ पांयन परत कोउ कोउ तृण धरि रद तजत गुमान ॥ जहँ निरषि हरषि सुर बरषि सुमन बहु जन उमराव किमि करत बखान। जहँ दशरथ सुवन सुभट रघुनंदन के रन महँ जानकी जगाई किरवान ॥ २० ॥ जहँ काहु हहरायगे काहु भहरायगे काहु जो समायगे गिरिन गुहान। जहँ काहु मुंहबायगे काहु ज्वर आयगे काहु उर खायगे लागे चिचियान ॥ जहँ प्रबल विकट भट भटन के अस गति कायर के कोउ किमि करइ बखान। जहँ दशरथ सुवन सुभट रघुनंदन के रन महँ जानकी जगाई किरवान ॥ २१ ॥ जहँ मिचकिमिचकि कर देत सीय भटगंण हिचकि हिचकि तिनतजि निज प्रान। जहँ गूदन चखत कोउ माँसनि भखत कोउ योगिनी बखत पाय नाचत महान ॥ जहँ जुरिजुरिकाकंक जंबुक जमात श्वान यज्ञसी मचाइजिय हरषि अघान। जहँ दशरथ सुवन सुभट रघुनंदनके रनमहँ जानकी जगाई किरवान ॥ २२ ॥ जहँ काटि काटि गुरि गुरि बांधि बांधि जुरि जुरि धर धर खप्परपै भरत विधान। जहँ यंज्ञसी करंत बहु योगिनी जमात जुरि गावत विविध विधि नाचत महान ॥ जहँ प्रबल उदंड महमारी सी प्रचंड दल भारिके असुरकर हारिहै खरवान। जहँ दशरथ सुवन सुभंट रघुनंदनके रन महँ जानकी जगाई किरवान ॥ २३ ॥ जहँ खन नन नन मारि खांडनके होत अरु सन नन नन शर छूटंत विधान। जहँ छन नन

ननपल परत रुधिर भट भन नन नन भन नाहट बरवान॥ जहँ कहि न परत धन मांचीयों प्रबल रन कायर गनन लखि हिय हहरान। जहँ दशरथ सुवन सुभट रघुनंदन के रन महँ जानकी जगाई किरवान॥ २४॥ जहँ डूब डूब मर भट शोणित के सर बहु बहु रन कल्हर कल्हर तजि प्रान। जहँ रासम अरिन चंद्र हासन सों काटि काटि रुंड मुंडै मेदिनी मिलाइ बहुधान॥ जहँ गरजि गरजि सिय गण अरि गज पर परि जो उठाय मृगराज सी समान। जहँ दशरथ सुवन सुभट रघुनंदन के रन महँ जानकी जगाई किरवान॥२५॥ (अमृतध्वनिछन्द) दोहा॥ सक सक रुधिर कबंधकै पियत कालिका युद्ध। सिंहिनि जनु उमराव भनि सद्यद्दलि गज क्रुद्ध॥ सद्यद्दलि गज क्रुद्धक्करि बल बित्तंत्तरहि बिगत्तत्तल बल। मद्दद्दरकि बिहद्ददरहि कुभट्टट्टरहिन जुट्टज्जुरिपल॥ सुद्दीर सनद्दस्समरसरीरंत्तजत सम्हद्ददकधकं। जुत्थज्जुरि जहँ योगिन्जितकित सद्य शोणित पीवत सक सक॥२६॥ जहँतहँ डबकत समरथल सद्य रुधिर अनहद। घट घट पीवत योगिनी जुत्थज्जुरि सदमद॥ जुत्थज्जुरि सद मद्ददेखि बरुत्थद्दनु जनु हत्थद्दनु धरि। भट्टट्टरहि कुभुट्टक्किमि कहि फुट्टहि मत्थ सुभट्टज्जनुतरि॥ मद्ददलि जुग रद करि बहुरद्दक्करि सब लुत्थत्थर महँ। सुद्दस्सीय सनद्दद्दनु दल सब्बब्बदत विहद्दज्जहँ तहँ॥ २७॥ जब धर धनु शर कूकदै उठी कालिका क्रुद्ध। बिचली सैन समरत्त त्तब भट्टट्टिकतनयुद्ध॥ भट्टट्टिकतन युद्ध ज्जितकित भज्जज्जिय जकिलज्ज

ज्जर धर मत्थ त्थुरत,वरुत्थ त्थरहर जुत्थ ज्जोम उप-त्थत्तनतर वृद्द दनुंज अवृद्द करि करि सव्व व्वलहति सद्य दरवर.। अद्दग्घस मंहि कोल कसमस अंग ग्गोरि उतंग ज्जवधर ॥ २८ ॥ धक धक दानव उर तबै. परंत पुहुमि तजि रत्थ। जब सिय समर सुंनद्ध है कुद्दद्दरि धनुहत्थ ॥ कुद्दद्दरि धनु.हत्थ,रुसर गुण सज्जं ज्जोर सुघोर ध्वनि कर। जंघ ज्जानु उतंग त्तनु है भग्ग ग्गिरतज जंग ज्जुरिमर ॥ मत्थ कटत.विमत्थत्तनु चढ़ि रत्थल्लरत वरुत्थ व्वैकवक।.सज्जस्सकतन हत्थद्धनुःसिसनद्दद्दस तत मत्थ दकद्दक ॥ २९ ॥ धरिध्धरि पटकत पुहुमिपर.अरि गज़ ससिस उतंग। भनि उमराव सुकालिकाजंगज्जोर.उमंग ॥ जंगज्जोर उमंगग्गनगन सव्व व्वल तन सद्य द्दलमल। उच्चच्चिहुर सुमच्चच्चय चहुं नच्च च्चुहुल पिसच्च च्चलवल ॥ मग्ग ग्गन क्कुमग्गं ग्गन हिन भग्ग ग्गहाति सुपग्ग ग्गति करि।.रद्द करि अनहृद्द दुरत्तन मद्द दनुदल कुद्दद्दरि धरि ॥ ३० ॥ भक भक भक मुखते रुधिर डारत सुभट अकत्थ। सिय गण चरण प्रहार उर लग्ग ग्गिरत व्विरत्थ ॥ लग्ग ग्गिरत विरत्थ त्तरफर हत्थ द्दनुषसि मत्थ द्दुनितर। मच्च च्चिहुर सुघच्चच्चपर विरच्च ज्जंग उमंग ग्गहवर ॥ नद्य द्दीह सुरत्क स्सवल सुत्थंतकत्तनुदुस भट्ट ज्जक जक। उट्ठ ग्गिर उरमाल करि च्यव गाहह हँसत भवे सभभक भक ॥ ३१ ॥ (साग्नित छप्पै) खं.खग्गद खङ्ग लै हत्थउठी रन मध्यप्रचारी। कं कग्गद काटि दनुमत्थ भरी खप्पर हुंकारी ॥ दं दग्गद दपट चहुं कित्त द्रुवन,जित्त कित्त प

National Library, Calcutta-27.
राने। सं सग्गृद सिंहिनी देख मनहुँ गज गन भहराने॥ भं भग्गृद भनत उमराव जन वं वग्गृद वदत लखि सहस जेहि। जं जग्गृद जानकी क्रुद्ध करि सुगंग्गृद गरद महि मरदि तेहि॥३२॥ दं दग्गृद दनुज दल वृंद बसे रन सहस्समट्टी। तं तग्गृद तिनहिं जनुकोप महामारी दहपट्टी॥ मं भग्गृद भट्ट सिरकट्ट कट्ट रहि प्रट्ट पट्ट महि। रं रग्गृद रक्त की धार नदी अति चली प्रवलबहि॥ चं चग्गृद चंडध्वनि चिक्करत दं दग्गृदद्दि करत अंग सुव। वं वग्गृद वदत उमराव जन सुजं जंग्गृद जानकी जयति तुव॥३३॥ रं रंग्गृद रक्तबीजादि मारि महिषेश विहंडी। चंचग्गृद चंड औ मुंड धुम्र लोचन शिरखंडी॥ सं सग्गृद सहित पुरुहूत अमर मजबूत अंजर करि। जं जग्गृद जोरयश मंड महा अति चंड भुवन भरि॥ मं मग्गृद मातु श्री जानकी नं नग्गृद नित्य बंदत चरण। भं भग्गृद भनल उमराव जन सुदं दग्गृददीन रक्खिय शरण॥३४॥ नं नग्गृद नैन बिकराल मनहुँ प्रज्वलित सुपावक। डं डग्गृद डाढ़ नख दंत प्रवल पविमान प्रभावक॥ रं रग्गृद रक्त जिह्वाहि वृहद्द बनैत अखंडित। भं भग्गृद भनत उमराव असुर दल बध रनपंडित॥ जंजग्गृद जानकी कालिका बंबग्गृद बिकट विग्रहधरी। हंहग्गृद हेत प्रहलाद जनु सु पं पग्गृद प्रकट पुनि नरहरी॥ ३५॥ सं सग्गृद शेष सकपकित कमठ कलमलित चकित चित। डं डग्गृद डाढ़ डगमगित विकल बाराह विगत हित॥ छं छग्गृद छुभित जलसिंधु हलित सुम्मेर सहित गिरि। भंभग्गृद भनत उमराव मनहुं दलराम स-

लेउ फिरि। कं कग्गद कालिका भारते धं धग्गद धरनि प-
ताल धासि। लं लग्गद लोकपाला दि इर सु दं दग्गद दीह
दिग्गज अवसि ॥ ३६ ॥ तं तग्गद तेज आघात मनो
रवि उदै युद्ध दश। चं चग्गद चढ़ी जनु भौंह काल की
दंड क्रोध वश ॥ डंडग्गद डाढ़ नख दंत बिकट बल पुं-
ज अनुक्रम। दं दग्गद देह बिकराल करी जनु रूप त्रि
बिक्रम ॥ जं जग्गद जानकी कालिका खं खग्गद खड्ग ख
प्पर धरी। भं भग्गद भनत उमरावजन सुलंलग्गद लोक
खरभर परी ॥ ३७ ॥ दं दग्गद दपट दनु मत्थ जानु
युग हत्थ कहकर। हंहग्गद होम जनु करी भरी खप्पर
हि क्रोधभर ॥ कं कग्गद कितिक लैमत्थ हत्थ कंदुक
लौं क्रीड़ित। सं सग्गद सृष्टि संहार हेत जनु रिस कर
मीड़ित ॥ लं लग्गद लोक लोकाधिपति नं नग्गद निरखि
थरहरित हुव। भं भग्गद भनत उमराव जन जं जग्गद
जैति जगंदंब तुव ॥ ३८ ॥ भं भग्गद भपट भकभोर
झौंर दनुमार बिदारी। जं जग्गद जथा हनुमान कनक
पुर कटक सँहारी ॥ छं छग्गद छौंर नादिनद सद्य शोणित
वहि ध्वच्छहि। कं कग्गद कितिक वहि मरेउकुभट कायर
दिल कच्छहि ॥ मं मग्गद मातु श्री कालिका रं रग्गद राम
जायां प्रवल। भं भग्गद भनत उमराव जन सुदं दग्गद
दैत कीन्ही कवल ॥ ३९ ॥ अं अग्गद अवधपुर जन्म
तुमाहिं रघुकुल महँ लीन्ही। गं गग्गद गाधिसुत यज्ञ
तुमाहिं रच्छन भलें कीन्ही ॥ सं सग्गद साय सब समन
तुमाहिं मुनि घरनि उधारी। मं मग्गद महेश्वर चाप
तुमाहिं खंडन कर डारी ॥ तं तग्गद तुमाहिं भृगुनाथ कर

पंपगृद प्रबलमद हानकी। भं भगृद भनत उमराव जन जं जगृद जय्यति श्री जानकी॥ ४०॥ बंबगृद बारहें बरस अवधपुर तुमहिं बिलासी। दं दगृद दंड-कारण्य गमन करि तुमहिं सुपासी॥ तं तगृद तुमहिं कर कोप विराधहि मार निपाती सं सगृद सपद सब वीरप्रबल मारीच अराती। गं गगृद गीधपति जानि जनु मं मगृद मोक्ष शुभ दानुकी॥ भं भगृद भनत उमराव जनु जं जगृद जैति श्रीजानकी॥ ४१॥ कं कगृद कबंधहि मारि तुमहिं गति दई प्रकासी। सं सगृद सबै जेहि जानकरी तुम ताहि सुपासी॥ बं बगृद बालि बधि तुमहिं करी सुग्रीव विशोकी। फं फगृद फौज कपि साजि तुमहिं बधि तीर विलोकीं॥ चं चगृद चपलतेहि बांधि तुम लं लगृद सुलंक पयानकी। भं भगृद भनत उमराव जन जं जगृद जैतिश्रीजानकी॥ ४२॥ कं कगृद कोप कर तुमहिं झपट रावण पर कीन्ही। सं सगृद सैन सब मारि तुमहिं निजपुर तेहि दीन्हीं॥ बं बगृद विभीषण जान नृपति तुम करी अखंडित। तं तगृद त्रिदश मुनि तुमहिं नाग किन्नर श्रय मंडित॥ रं रगृद रावरी चरित यह मं मगृद मोदजन प्रानकी। भं भगृद भनत उमराव जन सुजं जगृद जैति श्रीजानकी॥ ४३॥

कवित्त॥ ज्ञौन गिरातीता रूप अद्भुत अजीता शेष कंठपै अधीता जान गीतासी प्रभावरे। देवन के नीता लरी देतसों अभीता लई ख्यालपै अजीता कही वेदपै न आवरे॥ भनि उमराव ध्यान लावे जो प्रतीता डरे काल के न भीता इतिभीता न सतावरे। रामकेरे प्रीता

तापै पुत्र लौ बिनीता ऐसी नाम श्रीपुनीता सीता सीता जोनगावरे ॥४४॥ मैनका लजात कौन रंभाकी बिसात छटारूपकी नजात कही आछे छबि देहकी। जासु अंश बानी होत लच्छि शंकरानी देवतानी की कहांनी का बखा नी बिन जेहकी ॥ भनि उमराव भेद पावत ना वेद कहा बरनै उमेद नर औगुनकी गेहकी। देवन के शोक सबै मेटी श्रीसमेटी पतिव्रत्त लैलपेटी ऐसी बेटी तैं बिदेह की ॥४५॥ पैजके अखंडी महिषासुर बिहंडी बंद देवनके छंडी काल दंडहू को दंडीतैं। शत्रुजे घमंडी तापै कोप लै कोदंडी बान मारिकै कखंडी करि फोर भरभंडी तैं ॥ भनि उमराव लीलागावंते भुशुंडी तैसी बिक्रम बितंडी नवखंडी पै अदंडीतैं। रूप ब्रह्मअंडी श्रीप्रचंडी महाचंडी महा मारीसी उदंडी रण चंड मुंड खंडीतैं ॥ ४६ ॥ अमी कैसीप्याला हालाहलकी सुचाला महामारी सी कराला करै मातुसी सदृष्टहै। जात नहीं बरनी दुखदायक बैत-रनीसो तो आनँद पैसरनी सी बढ़ावै धरमिष्ठहै ॥ भनि उमराव रीति शत्रुहू पुनीत करै मित्र कैसी वृत्त होत पूरण अभिष्टहै। जाते होत सृष्ट भूत पालन अनिष्ट ऐसी कालिका सुदृष्ट तौ अरिष्टसबैइष्टहै ॥४७॥ भूमिऐसोका-गद जो हो तो कोटिकोटि कहूं स्याही सिन्धु कैसो वारि कोटि जो बनाव तो। कोटि कोटि कल्पवृच्छही की स्वच्छ शाखादृच्छ लेखनी विचित्र जो पवित्र को दिढावतो ॥ भनि उमराव कोटि शारदा बिरंचि जोपै लिख लिख गुणानुबाद रैनि दिन गाधतो। तोपै जगदंब श्री सु-जान मातु जानकी जू रावरी चरित्र कापै बरनि सिराव-

तो ॥४८॥ मंगलके खान करै आछे उर ज्ञान करै नीति की निधान करै नीके पहिचान की। मुक्ति करै पावन प्रकाश उक्त युक्त करै पाप निर्मुक्त करै कैयक बिधान की॥ भनि उमराव रूप तेजकी अवेज करै अचल वधेज करै भक्त श्री प्रधान की। ऋद्धि करै निद्धि करै सिद्धि की समृद्धि करै रुष्ट करै पुष्ट करैं तुष्टकरै जानकी ॥४९॥ रोग त्यों दुरोगकी बियोग कै प्रयोग ऐसे भोगकी सँयोग करै जैसेपुरुहूत की। संकट समस्त भूत प्रेतको शिकस्तकरै मस्तकरै रामभक्त जापतें अकूत की। भनि उमराव महामौज की बिलास करै त्रासकरै दूर महामारी मजबूत की। नासिका कलेश श्री सुदेशकी सुपासिका है जानकी पंचासिकापै बासिकाबिभूतकी॥५०॥

इति श्रीजानकी पंचाशिका उमराव बख़्शी कृत सम्पूर्णम् ॥ शुभम्भूयात् ॥

DBA000011200HIN

श्रीगणेशायनमः ॥

देवीजीकाअष्टक ॥

सवैया ॥ खप्पर खड्ग धरेरण गाजत सिंहचढ़ी रुण्ड मुंडन मालिका । लोचन लाल विशाल महा भृकुटी जनु कामकमान करालिका ॥ सादर शोणित पान किये सब योगिनि संग लिये गिरिबालिका । शत्रु समूहसँहारन को कवि लोगनको यह अत्रहै कालिका ॥ १ ॥ जादिन शुंभनिशुंभ बली साजिसैन उठो रणकोप करालिका । लै असि चर्म सु तादिन शिघ्र उठी कस वर्म प्रताप प्रनालिका ॥ काट खकान करी पलमें सहिबाट सो रुंडन मुंडन मालिका । शत्रु समूह सँहारन को कबि लोगन को यहअत्रहै कालिका ॥ २ ॥ हारके सैन सहाय समेत मरो महिषासुर माथधुनी । मारत भेलं लगी न तुम्हैं मधुकैटभ से भट कौन दुनी ॥ कोटिन दुष्ट लहैं गतिहै कुररा‍उर तीरथ देव दुमी । शत्रुसमूह सँहारनको जगदंब बिलंब न तेरो सुनी ॥ ३ ॥ शंकर से भरतार हेरंब षडानन से हूउ पुत्र गुनी । सासि सरस्वति से जगमाहँ सपत्न कहावत देव धुनी ॥ आदि भ अंत अनंत कला नहिंजानिसकै कोउ देवमुनी । शत्रु समूह सँहारन को जगदंब बिलंब न तेरो सुनी ॥ ४ ॥ गान करैं गुनि सिद्ध सुरासुर ध्यान धरैं मुनि रूप कदंब को । अद्भुत

ज्योति अखंड कला तनतेज करांड है मात हेरंबको॥ प्राणन बीच दिशो तजि किन्नर नागनमें जिहि बाजत बंबको। आंख उठाय सकै कोउ तापर जापर नेक कृपा जगदंबको॥ ५॥ रावण शीश सहस्र दल्यो तब कौन कह्यो बलवाह प्रलंब को। कंदुक लौं शिरकाट सु लैकर क्रीड़त क्रुद्ध बजायके बंबको॥ शोणितधार बहीगहिरी पहिरी उरमाल त्योंमुंड कदंब को। आँख उठाय सकै कोउ तापर जापर नेक कृपा जगदंबको॥ ६॥ उग्र उपाल प्रलयकरिजक्तकी शक्ति बड़ी जिनके तन भारी। शेष गणेश महेश मनावत विष्णु विरंचि मिले सुरसारी॥ क्यों उमराव कहै तनमें द्युति दामिनिसी दरशै नितन्यारी। ध्यान त्रिकाल करै नहिं क्योंनर काली कलेश के काटनहारी॥ ७॥ दौर जबै रणकाननमें मृगराजनि रुद्र भरीललकारी। वारनदेत हज़ारन को तब बेग सँहारनको तिहि भारी॥ तोमर शक्ति त्रिशूल गही कर त्यों करवाल कराल निकारी। ध्यान त्रिकाल करै नहिं क्यों नर काली कलेशके काटनहारी॥ ८॥

दोहा आठ सवैया पाठ जो करै जौन नर अग्र॥
ताकेजन उमराव कहि कारज होयँसमग्र॥ ९॥

इति श्रीदेवीअष्टकसम्पूर्णम्॥ शुभम्भूयात्॥

श्रीगणेशायनमः

जानकीमंगल.

जोइ जननी ब्रह्मांड अखिल करुणामई।
सोइ मिथिलापुर आय जनक॰कन्याभई॥
जेहिदिनकुंवरिविलोकिनृपतितेहिदिनमहा।
पाय पदारथ चार कृतारथ होई रहा॥
पुर प्रमोद बहु भांति बजे बाजन भले।
हय गय.हाटक चीर निछावर दैचले॥
हृदय विचार विचार सुनैना यहरही।
कौन बड़ीतपकीन्हसुता तेहिफललही॥
दम्पति आनँद अश्रुदृगन पंकजकली।
जनुहियमांतन प्रेमसुबाहिरबहिचली॥
घरघर बाज बधाव कलशमंगल सजैं।
चंद्रमुखीकलगान सुनतकोकिल लजैं॥
यहिविधिमोदविनोदसहितकछुदिनगये।
वय विचार नृपनाह स्वयंबर शुभठये॥
तोरण केतु पताक ध्वजा मंडप बने।
मंचकमांडि वितानसजीमखथल घने॥
धरिशिवधनुषप्रचंड नृपतियहमनधरे।
जोइकर निधन कोदंड कुंवरिसोई वरे॥
सुनि अवनीप अनेकंविविध आयेसवे।

उठेउ न चापकठोर उठे पौरुष सबै ॥
तब दशरथ नृप राजकुँवर मृगराजसे।
रामउठे अवलोकि धनुष गजराजसे ॥
नरनारी सिय सुकृत मनाव सुचालसे।
धकधकातनृप रानि युवा प्रतिपालसे ॥
सुमिरि रामगुरुचरण धनुषकरपरलियो।
लखेउ नतोरतकाहु तुरतदुइखँडकियो ॥
नृपसियरानिसुलोग नगरसंशयनिशा।
बीतेउ टूटत चाप भोरनिरमल दिशा ॥
जयजय भै सुरलोक सुमन बरषाकरे।
गजगामिनिकरिगानाविविधमुनिमनहरे ॥
करजयमाल धरायं सिया कहँ भामिनी।
चलींसुवासिन संग सुकरिवरगामिनी ॥
पहराई जयमाल सिया तब राम को।
सोहत वागुरु प्रेममनो छवि धाम को ॥
तिहुं पुर भयउह शोरशंभुधनुभंजेऊ।
सिया विवाहेउ राम नृपन मंद गंजेऊ ॥
लोकरीति कुलरीति वेद विधिपुनिरचे।
बोलिसुदशरथराय विविधउत्सवसचे ॥
दूलह राम सिया दुलही मंडफ लसै।
छबिशृँगार धरिदेंहमनहुँ यकमगबसै ॥
दृगघूंघुटबिच लसत सुरँग पटभीनके।
हरत सरस्वति वीच चपलता मीन के ॥
भयो वेदविधि ब्याहगान युवतिनकिये।
दाइजको कहिकौन जौननृप मणिदिये ॥

दशरथ राय नृपाल जनक समधीबने।
प्रीति प्रयोनिधि भाव परस्पर को गने॥
कहि जेवनार किरीति सकै को कारिका।
जेहि ललचात सुरेश शची वृंदारिका॥
राम चले सिय ब्याह अवध आये तबैं।
आनँद मोद विनोदजात किमिकहिसबैं॥
श्रीमहारानीजूकीचरित्रसंतमनभावनी।
गायउ जन उमराव सदा शुभ पावनी॥
हरिजन के यहिंध्यान सो सरवस प्रानसे।
भवजलनिधिअवगाहकेदृढ़ जलयानसे।
यह शुभ मंगल चारु सियाजुकीजो पढ़ै।
सुखंपरिवारविभूतिबिजयदिनदिनबढ़ै॥

इतिश्री जानकी मंगल समाप्तं॥शुभमस्तु॥

National Library, Calcutta-27.